© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 09 , Issue : 04 | October - December 2022

संगीत एवं संगीत के प्रकारों पर एक विवेचना

Dr. Rajender Singh
Lecturer (Music), Jat Sr. Sec. School
email : rajenderbuwana@gmail.com

सार

भारतीय परम्परा एवं मान्यता के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा से मानी गई है। ब्रह्मा द्वारा भगवान शंकर को यह कला प्राप्त हुई। भगवान शंकर अथवा शिव ने इसको देवी सरस्वती को दिया, जो ज्ञान एवं कला की अधिष्ठात्री देवी कहलाई। मूर्तियों एवं चित्रों में भी देवी सरस्वती को आपने वीणा एवं पुस्तक के साथ देखा होगा। नारद ने संगीत कला का ज्ञान देवी सरस्वती से प्राप्त कर स्वर्ग में गंधर्व, किन्नर एयं अप्सराओं को इसकी शिक्षा प्रदान की। यहीं से इस कला का प्रचार पृथ्वी लोक पर ऋषियों द्वारा किया गया। आदि काल में मानव हर्ष एवं उल्लास की अभिव्यक्ति, नृत्य एवं विभिन्न प्रकार की ध्वनियोंन को आवाज के माध्यम से निकाल कर करता था। मानव के विकास एवं सभ्यता के विकास के साथ इन ध्वनियों की पहचान, संगीत के लिए की गई जिनके विभिन्न प्रयोग के द्वारा संगीत की रचना की जाने लगी।

मुख्य शब्द : भारतीय, परम्परा, संगीत, चित्रपट, लोक संगीत, भजन, इत्यादि।

प्रस्तावना

वास्तव में भारतीय संगीत की उत्पत्ति धार्मिक प्रेरणा से ही हुई है। परन्तु धीरे-धीरे यह धर्म को तोड़कर लौकिक जीवन से संबन्धित होती गई और इसी के साथ नृत्य कला, वाद्य तथा गीतों के नये-नये रूपों का आविष्कार होता गया। कालांतर में नाट्य भी संगीत का एक हिस्सा बन गया। समय के साथ संगीत की विभिन्न धाराएँ विकसित होती गई, नये-नये राग, नये-नये वाद्य यंत्र और नये-नये कलाकार उत्पन्न होते गये। भारतीय संगीत जगत अनेक महान् विभूतियों के योगदानों के परिणामस्वरूप ही इतना विशाल रूप धारण कर सका है।

संगीत की परिभाषा

संगीत वह ललित कला है, जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं। ललित कला की श्रेणी में 5 कलाएँ आती हैं-संगीत, कविता, चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला में मानव भावनाओं को व्यक्त तो करते हैं, परन्तु प्रत्येक में उसका माध्यम बदला करता है। अगर रंग, पैन्सिल, काग़ज़ आदि के द्वारा भावों को व्यक्त करते हैं तो चित्रकला की रचना होती है। इसी प्रकार यदि स्वर-लय के द्वारा अपने भावों को प्रकट करते हैं तो संगीत की रचना होती है।

किवदन्ती

ललित कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस प्रकार संगीत समस्त कलाओं में सर्वश्रेष्ठ हुआ। संगीत का सम्बन्ध देवी-देवताओं से भी जोड़ा गया है। किवदन्ती है कि सर्वप्रथम ब्रह्मा ने सरस्वती देवी को और सरस्वती ने नारद को संगीत की शिक्षा दी। इसके बाद नारद ने भरत को और भरत ने नाट्यशास्त्र द्वारा जन साधारण में संगीत का प्रचार किया। संगीत की उत्पत्ति में इस प्रकार की मुख्य 7 किवंदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में इन किवंदन्तियों का महत्व शायद रहा भी हो, किन्तु आज के वैज्ञानिक युग में इनका विशेष महत्व नहीं है। 'संगीत' शब्द 'गीत' शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाकर बना है। 'सम्' यानी 'सहित' और 'गीत' यानी 'गान'। 'गान के सहित' अर्थात् अंगभूत क्रियाओं (नृत्य) व वादन के साथ किया हुआ कार्य 'संगीत' कहलाता है।

नृत्तं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवर्ति च।

अतो गीतं प्रधानत्वादत्रादाभिधीयते।।

भारतीय संगीत

प्राचीन काल में भारतीय संगीत के दो रूप प्रचलित हुए-1. मार्गी तथा 2. देशी। कालांतर में मार्गी संगीत लुप्त होता गया। साथ ही देशी संगीत दो रूपों में विकसित हुआ- (i) शास्त्रीय संगीत तथा (ii) लोक संगीत।

- शास्त्रीय संगीत शास्त्रों पर आधारित तथा विद्वानों व कलाकरों के अध्ययन व साधना का प्रतिफल था। यह अत्यंत नियमबद्ध तथा श्रेष्ठ संगीत था।
- लोक संगीत काल और स्थान के अनुरूप प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में स्वाभाविक रूप से पलता हुआ विकसित होता रहा, अतः यह अधिक विविधतापूर्ण तथा हल्का-फुल्का व चित्ताकर्षक है।

संगीत की उत्पत्ति

भारतीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से मानी जाती है। वादों का मूल मंत्र है - 'ॐ' (ओऽम्)। (ओऽम्) शब्द में तीन अक्षर अ, उ तथा म् सम्मिलित हैं, जो क्रमशः ब्रह्मा अर्थात् सृष्टिकर्ता, विष्णु अर्थात् जगत् पालक और महेश अर्थात् संहारक की शक्तियों के द्योतक हैं। इन तीनों अक्षरों को ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद से लिया गया है। संगीत के सात स्वर षड़ज (सा), ऋषभ (र), गांधार (गा) आदि वास्तव में ऊँ (ओऽम्) या ओंकार के ही अन्तर्विभाग हैं। साथ ही स्वर तथा शब्द की उत्पत्ति भी ऊँ के गर्भ से ही हुई है। मुख से उच्चारित शब्द ही संगीत में नाद का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार 'ऊँ' को ही संगीत का जगत माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि जो साधक 'ऊँ' की साधना करने में समर्थ होता है, वही संगीत को यथार्थ रूप में ग्रहण कर सकता है।

संगीत के रूप

प्रत्येक कला के मुख्य दो रूप होते हैं-क्रिया और शास्त्र। क्रिया के अंतर्गत उसकी साधना विधि और शास्त्र के अंतर्गत उसका इतिहास, परिभाषिक शब्दों की व्याख्या आदि आती है। संगीत के भी दो रूप हैं-

क्रियात्मक रूप

संगीत का क्रियात्मक रूप वह है, जिसे हम कानों द्वारा सुनते हैं अथवा नेत्रों द्वारा देखते हैं। दूसरे शब्दों में क्रियात्मक संगीत में गाना, बजाना और नाचना आता है। गायन और वादन को हम सुनते हैं और नृत्य को देखते हैं। क्रियात्मक रूप में राग, गीत के प्रकार, आलाप-तान,

सरगम, झाला, रेला, टुकड़ा, आमद, गत, मींड आदि की साधना आती है। संगीत का यह पक्ष बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

शास्त्र पक्ष

शास्त्र पक्ष में संगीत सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करते हैं। इसके दो प्रकार हैं-क्रियात्मक शास्त्र और शुद्ध शास्त्र। क्रियात्मक शास्त्र में क्रियात्मक संगीत का अध्ययन आता है, जैसे रागों का परिचय, गीत की स्वर-लिपि लिखना, तान-आलाप, मिलते-जुलते रागों की तुलना, टुकड़ा, रेला आदि। इस शास्त्र से क्रियात्मक संगीत में बड़ी सहायता मिलती है। शुद्ध शास्त्र में संगीत, नाद, जाति, आरोह-अवरोह, स्वर, लय, मात्रा, ताल, ख़ाली आदि की परिभाषा, संगीत का इतिहास आदि का अध्ययन आता है।

संगीत पद्धतियाँ

भारतवर्ष में मुख्य रूप से दो प्रकार का संगीत प्रचार में है, जिन्हें संगीत की पद्धति कहते हैं। उनके नाम हैं-उत्तरी अथवा हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति और दक्षिणी अथवा कर्नाटक संगीत पद्धति।

उत्तरी संगीत पद्धति

उत्तरी संगीत पद्धति को हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भी कहते हैं। यह पद्धति उत्तरी हिन्दुस्तान में-बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, जम्मू-कश्मीर तथा महाराष्ट्र प्रान्तों में प्रचलित हैं।

दक्षिणी संगीत पद्धति

दक्षिणी संगीत पद्धति को कर्नाटक संगीत पद्धति भी कहते हैं। यह तमिलनाडु, मैसूर, आंध्र प्रदेश आदि दक्षिण के प्रदेशों में प्रचलित हैं। ये दोनों पद्धतियाँ अलग होते हुए भी इनमें बहुत कुछ समानताऐं है।

संगीत के प्रकार

भारतीय संगीत के मुख्य दो प्रकार हैं-शास्त्रीय संगीत और भाव संगीत। शास्त्रीय संगीत उसे कहते हैं, जिसमें नियमित शास्त्र होता है और जिसमें कुछ विशिष्ट (ख़ास) नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ, शास्त्रीय संगीत में राग के नियमों का पालन करना पड़ता है, न करने से राग हानि होती है। इसके अतिरिक्त लय-ताल की सीमा में रहना पड़ता है, गीत का कौन सा प्रकार हम गा रहे हैं, उसका निर्वाह भी उसी प्रकार से होना चाहिए, इत्यादि-इत्यादि। भाव संगीत में शास्त्रीय संगीत के समान न कोई बन्धन होता है और न उसका नियमित शास्त्र ही होता है। भाव संगीत का मुख्य और एकमात्र उद्देश्य कानों को अच्छा लगना है, अत: उसमें कोई बन्धन नहीं रहता-चाहे कोई भी स्वर प्रयोग किया जाए, चाहे जिस ताल में गाया जाए व आलाप, तान, सरगम, आदि कुछ भी प्रयोग किया जाए अथवा न प्रयोग किया जाए। भाव संगीत का मुख्य उद्देश्य रंजकता है। रंजकता के लिए ही कहीं-कहीं शास्त्रीय संगीत का सहारा भी लिया जाता है। भाव संगीत को सुगम संगीत कहते हैं। भाव संगीत को मुख्य तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- चित्रपट संगीत
- लोक संगीत
- भजन-गीत

चित्रपट संगीत

व्यापक अर्थ में जिस किसी गीत का प्रयोग चित्रपट (सिनेमा) में हुआ हो, उसे चित्रपट संगीत कहते हैं। बैजू बावरा का आज गावत मन मेरो तथा झनक-झनक पायल बाजे का 'गिरधर गोपाल' दोनों की शैली शास्त्रीय होते हुए भी ये चित्रपट गीत हैं, क्योंकि इनका प्रयोग चित्रपट में हो चुका है।

साधारण फ़िल्मी गीतों की कुछ निजी विशेषताएँ होती हैं, जो कि इस प्रकार हैं-

- स:- भावानुकूल गीत और आकर्षक रचना
- रे:- विभिन्न वाद्यों का प्रयोग

- ग:- श्रृंगार रस के हृदयस्पर्शी शब्द
- म:- सुरीले और आकर्षक कंठों के द्वारा गाया जाना
- प:- ध्वनि बद्ध (रिकार्ड) करने के पूर्व ठीक प्रकार से जाँचना

जिन गीतों में ये विशेषताएँ हों और जिनका प्रयोग चित्रपट में हुआ हो, वे फ़िल्मी गीत कहलाते हैं। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण साधारण जनता फ़िल्मी गीतों की ओर अधिक आकर्षित होती है।

लोक गीत

यह ग्रामीणों का गीत है। इन गीतों में सैकड़ों वर्षों से चले आये रीति-रिवाज़ों की झाँकी मिलती है। इसके अंतर्गत शादी के गीत, विभिन्न संस्कारों पर गाये जाने वाले गीत, चैती, कजरी, आल्हा, बिरहा, बाऊल, माहिया, भटियाली, मांझी आदि लोक गीत आते हैं। इनका स्वरूप सरल, भाव छुते गुये, कुछ स्वरों के अन्दर सीमित तथा लय प्रधान होते हैं। इन गीतों को सुनते ही साधारण व्यक्ति ताली देने लगते हैं। इसलिये लोक गीतों के साथ ढोलक बजाये जाती है।

भजन-गीत आदि

मुख्य लेख: भजन

इसमें शास्त्रीय संगीत की तरह बन्धन नहीं रहता। जिन गीतों में ईश्वर का गुणगान या उनसे प्रार्थना की जाती है, उन्हें भजन और जिन कविताओं को स्वर-ताल बद्ध करके गाते हैं, उन्हें गीत कहते हैं। राग-ताल नियमों से स्वतंत्र, आकर्षक रचनायें, भावानुकूल शब्दों द्वारा गीत रचना आदि इनकी विशेषताएँ होती हैं। अधिकतर ये दादरा और कहरवा ताल में होते हैं। इनमें और चित्रपट गीतों में मुख्य अन्तर यह है कि इनकी तुलना में चित्रपट गीतों की रचना बहुत चलती-फिरती और शब्द सस्ते ढंग के होते हैं।

निष्कर्ष

संगीत मानवीय लय एवं तालबद्ध अभिव्यक्ति है। भारतीय संगीत अपनी मधुरता, लयबद्धता तथा विविधता के लिए जाना जाता है। वर्तमान भारतीय संगीत का जो रूप दृष्टिगत होता है,

वह आधुनिक युग की प्रस्तुति नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास के प्रारम्भ के साथ ही जुड़ा हुआ है। वैदिक काल में ही भारतीय संगीत के बीज पड़ चुके थे। सामवेद उन वैदिक ऋचाओं का संग्रह मात्र है, जो गेय हैं। प्राचीन काल से ही ईश्वर आराधना हेतु भजनों के प्रयोग की परम्परा रही है। यहाँ तक की यज्ञादि के अवसर पर भी समूहगान होते थे। ध्यान देने की बात है कि प्राचीन काल की अन्य कलाओं के समान ही भारतीय कला भी धर्म से प्रभावित थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वक्सन्त, संगीत विशारद संगीत कार्यालय, हाथसस।
2. से सेन, डॉ0 अरूण कमार, गारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,पाल।
3. श्रीवास्तव, श्री हरीश चन्द्र, रय परिचय सभी भाग संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद |
4. वसन्त, संगीत विशारद संगीत कार्यालय, हाथरस |
5. परांजपे, श्रीधर, संगीत ब्रोघ।
6. गोवर्धन, श्रीमती शान्ति, संग्रीत शास्त्र दर्षण।
7. चन्द्र, राय भाग 742 संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद |
8. वसन्त, संग्रीत विशारद संगीत कार्यालय, हाथरस |
9. परांजपे, श्रीधर, संगीत बोघ।
10. गोवर्धन, श्रीमती शान्ति, संग्रीत शास्त्र दर्पण।